International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.1 September – October 2022

21 वीं सदी के कहानी में राष्ट्रीय भावना

संतोष महादेव बनकर[1] , प्रो. डॉ. सदानंद भोसले[2]

[1] पीएच.डी. शोधार्थी, हिंदी विभाग, सा.फु. पुणे विश्वविद्यालय, पुणे.

[2] शोध निर्देशक, हिंदी विभाग, सा.फु. पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

Corresponding Author - संतोष महादेव बनकर

Email - bankarunipune@gmail.com

DOI - 10.5281/zenodo.7314922

साहित्य की विभिन्न विधाओं में कहानी एक अलग एवं महत्वपूर्ण विधा रही है। इस विधा ने समय समय पर अपने आप में परिवर्तन लाकर आज इस सदी में अपना अलग एवं विकसित रूप प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद पूर्वकाल, प्रेमचंद काल तथा प्रेमचंदोत्तर काल से लेकर आज के इस युग में कहानी विधा ने अपने आप को एक नये रूप में प्रस्तुत किया है। इस विधा ने हर समय में समाज का जीवन्त चित्र प्रस्तुत कर समाज की यातनाओं, समस्याओं को वाणी देने का सफल प्रयास किया है। समाज को तत्कालीन जीवन से परिचत किया है। समाज के तत्कालीन जीवन से परिचित कराने का महत्वपूर्ण कार्य इस विधा ने किया है। इस कारण कहानी विधा एक सफल एवं सार्थक विधा रही है ऐसा कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

कहानी विधा ने हर समय में अपने माध्यम से राष्ट्र के प्रति आदर, सम्मान को प्रस्तुत किया है। राष्ट्र के प्रति अपने सम्मान को कई कहानिकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है उनमें से एक है- संजीव। संजीव जी ने अपने कहानी साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को प्रस्तुत कर राष्ट्रीय अस्मिता को जगाने का सफल प्रयास अपने कहानी साहित्य के माध्यम से किया है। 'काउंट डाउन' कहानी में राष्ट्र के प्रति अपनी भावना को रेखांकित करते हुए लिखते है, ''यहाँ आकर मुझे एक विराट बोधिसत्व का एहसास हो रहा है सर! पृथ्वी से तटस्थ होते ही मुझे लगा- वहाँ परत-दर-परत छाया हुआ जातिभेद, रंगभेद, शोषण, कमीनगी और सबसे बढ़कर छद्म कितने अर्थहीन और हास्यास्पद हैं। उँच-नीच और नफरत के सारे सवाल अहमकाने लगते हैं यहाँ से। यह सब बलि के पशुओं की सींग लड़ाई जैसा है। गूलर के कीटों जैसे उस नन्ही धरती में ठुँसे पड़े लोग! कितने असभ्य, बचकाने और आत्मघाती हैं इनके भाववादी व्यामोह! कल्पना के देवता और हकीकत की अजानी सीमाओं का विस्तार! मेरा वश चले तो मैं एक-एक को यहाँ ले

आऊँ, और दिखाऊँ-यहाँ से देखो, अपनी पृथ्वी को तुम कहाँ ले जा रहे हो!''[1] स्पष्ट है आज देश में कही भी प्रेम, आदर सम्मान नहीं रहा है। सब जगह अराजकता ही अराजगता दिखाई दे रही है। जातिभेद शोषण आदि के कारण राष्ट्र का चित्र अत्यंत भयानक दिखाई दे रहा है। जहाँ रामराज्य होना चाहिए वहाँ उससे उल्टा चित्र दिखाई दे रहा है। इसको कहानी सफलता के साथ प्रस्तुत करती है।

'अल्लारखा, दरगाह और मूरतें' कहानी में राष्ट्र के प्रति अपनी भावना को व्यक्त करते हुए बताते है, ''देश एक दरिया है जिसमें कहाँ-कहाँ से पानी पाकर सदियों से समाता रहा है। कई हमलावर जातियाँ आई-आर्य, यूनानी, शक, हुण, तुर्क मुगल और यूरोप के लोग। हार-जीत, हैसियत और चालाकियों के हिसाब से मुगलों के पहले भी लोग फिरकों और जातियों में तकसीम होते रहे और इनके बाद भी। मगर और कौमें तो कमोबेश मिलकर साथ भी रहने लगीं, मुसलमानों तक आते-आते हार-जीत के मसले और कट्टरता की खोल के चलते पूरी तरह एक होने की राह में रुकावट आ गई। पहले भी आपसी फूट का लाभ हमलावर लेते रहे, बाद में अंग्रेजों ने भी लिया और हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को उनका गुलाम बनना पड़ा। होश जब आया तो फिर वे मिलकर लड़े और अंग्रेजों को भागना पड़ा, मगर जाते-जाते देश तकसीम कर गए हिन्दुस्तान-पाकिस्तान में। दु:ख की बात है कि हम फिर उसी फूट के कगार पर ला खड़े किए जा रहे हैं।''[2] स्पष्ट है कि आज देश में एकता का होना जरुरी है। एकता ही देश का विकास कराने में अहम भूमिका निभाती है। लेकिन आज देश में जाति-धर्म के नामपर देश टुकड़ों में बटता जा रहा है। इसको कहानी सफलता के साथ अभिव्यक्त करती है।

'कन्फेशन' कहानी में राष्ट्रीय भावना को सफलता के साथ प्रस्तुत किया है। जैसे- ''मेरे पिता रूस की शाखालिन कोयला खानों का उदाहरण देकर बताते नहीं थकते थे कि राष्ट्र की सम्पत्ति किसी व्यक्ति विशेष के लाभ और कैदियोंनुमा श्रमिकों के शोषण के लिए न होकर पूरे राष्ट्र की ही और शोषण-मुक्ति का बायस बने, इसलिए राष्ट्रीयकरण कितना ज़रुरी है। आज कहाँ हैं पिता? कहाँ है शाखालिन? कहाँ है रुस और कहाँ है केलूडाँगा...? किसने सोख लिया उस पवित्र संकल्प का जीवन रस?''[3] स्पष्ट है राष्ट्र की सम्पत्ति किसी एक की न होकर पूरे देश की होती है। इसलिए उसकी रखवाली करना, देखभाल करना हमारा कर्तव्य है इसको कहानी बताती है।

'काउंट डाउन' कहानी में राष्ट्रीय भावना को सफलता एवं सरलता के साथ प्रस्तुत किया है। जैसे- ''भौतिकी और अन्तरिक्ष विज्ञान की उच्च शिक्षा और हजारों किलोमीटर की हर तरह की उड़ानों के बावजूद उसे जाने क्यों घूम-फिरकर इस धरती के दो टाँगों, दो हाथों और मुट्ठी भर के खुराफाती दिमाग़वाले, इस आदमी कहे जानेवाले जीव

को समझ पाना ही सबसे बड़ी चुनौती लगता रहा। धरती और अन्तरिक्ष को समझ पाना और अतिक्रमित कर पाना शायद उसके लिए उतना मुश्किल नहीं, मगर खुद को समझ पाना या अतिक्रमित कर पाना क्या अभी सम्भव हो पाएगा उससे? दुनियाओं का समूह मिलकर एक ब्रम्हाण्ड बनता है जबकि यहाँ सब अपने आप में अलग-अलग ब्रम्हाण्ड हैं। अमेरिका का राष्ट्रपति अपने आप में अकेला ब्रम्हाण्ड है। रुस, जर्मनी, जपान, चीन के राष्ट्राध्यक्ष अलग-अलग ब्रम्हाण्ड! पाटिल अलग ब्रम्हाण्ड है। वर्मा अंकल अलग। पापा अलग ब्रम्हाण्ड हैं तो मम्मी अलग। इन ब्रम्हाण्डों में जाने कितनी आकाश गंगाएँ नीहारिकाएँ, तारे, ग्रह और उपग्रह हैं और जाने कितने ब्लैक होल्स! माँ की धार्मिक आस्था का ध्रुव तारा मात्र 500 प्रकाशवर्ष ही नहीं, उससे भी कहीं दूर सापेक्ष अटलता पर स्थिर है। उनके ज्योतिषियों, पुरोहितों, 'स्वामियों', 'हनुमान दलों', का अद्भूत नियंत्रण है उनकी सोच पर। वे जब बताने लगती हैं कि अरे तुम लोग क्या रॉकेट और स्पुटनिक बनाओगे, क्या मिसाइल, क्या इनसेट सैटेलाइट, क्या टीवी और टेस्टट्यूब बेबी। हमारे ऋषि-मुनि पहले ही कर-कराकर यह सब छोड़ चुके हैं तो उसका सारा ज्ञान धरा का धरा रह जाता है।''[4] स्पष्ट है देश का वास्तविक चित्र कहानी व्यक्त करती है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि, संजीव ने अपनी काउंट डाउन, कन्फेशन, अल्लारखा, दरगाह और मूरतें इन कहानियों के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को सफलता के साथ प्रस्तुत कर उसे मानव समाज के हृदय में जगाने का सफल प्रयास अपनी कहानियों के माध्यम से किया है। राष्ट्र के प्रति प्रेम, आदर, सम्मान को इन कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत कर राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह सफलता के साथ किया है।

संदर्भ:

1. संजीव की कथा यात्रा: दूसरा पडाव, पृष्ठ 362
2. वही, पृष्ठ 103
3. वही, पृष्ठ 276-277
4. वही, पृष्ठ 356